

## निर्वाणकाण्ड (भाषा)

(श्री भैया भगवतीदास कृत)

(दोहा)

वीतराग वन्दौ सदा, भावसहित सिर नाय ।

कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय ॥

(चौपाई )

अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चम्पापुरि नामि ।  
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, बन्दौ भाव-भगति उर धार ॥  
चरम तीर्थकर चरम-शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर ।  
शिखर समेद जिनेसुर बीस, भावसहित बन्दौ निश-दीस ॥  
वरदत्तराय रु इन्द्र मुनिन्द, सायरदत्त आदि गुणवृन्द ।  
नगर तारवर मुनि हूँठकोड़ि<sup>१</sup>, बन्दौ भावसहित कर जोड़ि ॥  
श्री गिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात ।  
शम्भु प्रद्युम्न कुमार द्वै भाय, अनिरुध आदि नमूँ तसुपाय ॥  
रामचन्द्र के सुत द्वै वीर, लाडनरिन्द आदि गुणधीर ।  
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति मँझार, पावागिरि बन्दौ निरधार ॥  
पाण्डव तीन द्रविड़-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुक्ति पयान ।  
श्री शत्रुंजयगिरि के सीस, भावसहित बन्दौ निश-दीस ॥  
जे बलभद्र मुक्ति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये ।  
श्री गजपन्थ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँ काल ॥  
राम हणू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील महानील ।  
कोड़ि निन्याणव मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वन्दौ धरि ध्यान ॥  
नंग-अनंगकुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्द्ध प्रमाण ।  
मुक्ति गये सोनागिरि शीश, ते बन्दौ त्रिभुवनपति ईस ॥  
रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा-तट सार ।  
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते बन्दौ धरि परम हुलास ॥

1. साढ़े तीन करोड़

रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहँ छूट ।  
 द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोड़ि बन्दौं भव पार ॥  
 बड़वानी बड़नगर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग ।  
 इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते बन्दौं भव-सागर-तर्ण ॥  
 सुवरणभद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वर शिखर मँझार ।  
 चेलना नदी-तीर के पास, मुक्ति गये बन्दौं नित तास ॥  
 फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरिरूप ।  
 गुरुदत्तादि मुनीश्वर जहाँ, मुक्ति गये बन्दौं नित तहाँ ॥  
 बालि महाबालि मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय ।  
 श्री अष्टापद मुक्ति मँझार, ते बन्दौं नित सुरत सँभार ॥  
 अचलापुर की दिश ईसान, तहाँ मेंढगिरि नाम प्रधान ।  
 साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय ॥  
 वंशस्थल वन के ढिग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय ।  
 कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम ॥  
 जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे ।  
 कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करूँ जोरि जुग पान ॥  
 समवसरण श्रीपार्श्व-जिनंद, रेसन्दीगिरि नयनानन्द ।  
 वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते बन्दौं नित धरम-जिहाज ॥  
 मथुरापुर पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामीजी निर्वाण ।  
 चरमकेवली पंचम काल, ते बन्दौं नित दीनदयाल ॥  
 तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजै तहाँ ।  
 मन-वच-काय सहित सिरनाय, वन्दन करहिं भविक गुणगाय ॥  
 संवत् सतरह सौ इक्ताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल ।  
 'भैया' वन्दन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल ॥

\*\*\*\*\*